दलहनीं फसलों में होम्यो समिश्रणों का प्रयोग

अरहर– इसमें सुधा नामक दवा से पहले बीज सोधन करना चाहिए बुवाई से 24 घंटे पूर्व।

मात्रा– 125एमएल0 सुधा से प्रति हेक्टेयर बीज को शोधित करना चाहिए।

सोधन प्रयोग विधि– 100 ग्राम गुड़, आवश्यकतानुसार स्वच्छ जल, 125 एम0एल0सुधा को किसी स्टील के बर्तन में मिश्रण तैयार कर बीज को अच्छी तरह से लेपित कर छाये में सुखा लेना चाहिए।

सावधानीं–सुखाने हेतु पक्के फर्श या प्लास्टिक का प्रयोग होना चाहिए।

अमृत + –इसका प्रयोग पौधों के 6–10 इंच की लम्बाई हो जाने पर प्रयोग करना चाहिए।

प्रयोग विधि–प्रति हे04 कु0 गोबर की खाद, 500एम0एल0 अमृत + और 4 किलो गुड़ एवं आवश्यकतानुसार पानी के साथ मिश्रण तैयार भुरकाव कर देना चाहिए। भुरकाव के समय ध्यान देना चाहिए कि खेत में पर्याप्त नमी हो कीचड़ जैसी स्थिति होनी चाहिए। ऐसी स्थिति नहीं होने से सिंचाई के उपरान्त भुरकाव होना चाहिए भुरकाव सायंकाल ही हो।

सुधा– इसका प्रयोग पौधे की लम्बाई 1 से 1½ फुट होने की स्थिति में पर्णीय छिड़काव होना चाहिए। साथ ही **आवश्यकता पड़ने पर** फूल आने के 15 दिन पहले दूसरा पर्णीय छिड़काव करना चाहिए। सुधा के संस्तुति के आधार पर।

जीवन का प्रयोग–फूल गिरने, फलों में सुकड़न, फल के न आने की स्थिति में इसका प्रयोग करना चाहिए। जीवन के संस्तुति के आधार पर। इसका प्रयोग सुरक्षात्मक रूप से भी कर सकते हैं। फली निकलने की अवस्था में जिससे बीजो में एकरूपता, सुडौलपन और चमक अच्छी प्राप्त होती है। जिससे गुणवत्ता परख उत्पादन मिलता है।

मोक्षा का प्रयोग– किसी भी प्रकार के फली भेदक, तना भेदक, मच्छर एवं कीट के रोकथाम के लिए इसका प्रयोग मोक्षा के संस्तुति के आधार पर करना होगा।

सारांश– अमृत + का प्रयोग अतिरिक्त आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति हेतु करना होता है। अमृत + संस्तुति के आधार पर करना होगा।

सुधा– उकढा रोग के नियंत्रण हेतु।

जीवन– गुणवत्ता युक्त उत्पादन एवं फल फूल की सुरक्षा हेतु।

मोक्षा– कीट नियंत्रण हेतु।

नोट– (1) मूंग, उर्द, चना, मटर आदि दलहनी फसलो में भी उपरोक्त दवाओं का प्रयोग आवश्यकता पड़ने पर उन दवाओं के संस्तुति के आधार होना चाहिए।

(2) फल, फूल एवं बीमारी के रोगथाम हेतु एवं गुणवत्ता युक्त उत्पादन हेतु–जीवन और बरदान का वर्गीकरण–

जीवन– खड़ी फसलो में प्रयोग हेतु।

बरदान–बेल वर्गीय या फैलने वाली फसलो हेतु। इसी दवा से बेल वर्गीय फसलो के बीज का शोधन करना होगा।

(3) **नाइट्रोजन** की पूर्ति हेतु **संजीवनी** नामक उत्पाद का प्रयोग करना चाहिए। संजीवनी के संस्तुति के आधार पर।